classmate

Date 20/07/20

Page 1

Subject - Philosophy
Class :- B.A, Part-III (Hons)
Paper :- V

⟹ प्राणवाद (Spiritism)

प्राणवाद (Spiritism) जीववाद का ही विकसित रूप है। जीववाद की प्रगति प्राणवाद में हो जाती है। प्राणवाद के अनुसार सारा विश्व जीवों (स्पिरिट) से परिपूर्ण है। जीव मुख्यतः तीन प्रकार के हैं जिन्हें नीम्फस (Nymphs) औरयडस (Oreads), डिरयडस (Dyriads) कहा जाता है। प्राणवाद के अनुसार जीव अदृश्य है।

प्राणवाद धर्म की एक ऐसी अवस्था है जो सार्वभौम कही जा सकती है। प्रत्येक देश के धर्म के इतिहास में प्राणवाद नामक अवस्था का संकेत मिलता है। यह धर्म आज

भी मुख्यत: दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया के बीच प्रचलित है।

प्राणवाद में भिन्न-भिन्न कोटि के जीवों को माना गया है। प्राणवाद, जीववाद (Animism) से भिन्न है। जीववाद में आत्मा वस्तुओं के साथ बँध जाती है परंतु प्राणवाद में आत्मा वस्तुओं से अपना संबंध विच्छेद करने की क्षमता रखती है। प्राणवाद में आत्मा की स्वतंत्र सत्ता मानी गई है।

प्राणवाद में आत्मा का संगत विचार मिलता है, अनुचित होगा। प्राणवाद के मानने वालों की यह धारणा ~~क~~ थी कि आत्मा शरीर के आघात का अनुभव करती है। यदि किसी व्यक्ति के शरीर। प्राणवाद के अनुसार एक ही आत्मा विभिन्न शरीरों में बारी-बारी से प्रवेश करती है तथा एक शरीर में बारी-बारी से विभिन्न आत्माओं का निवास हो सकता है।

प्राचीन काल के लोग स्वप्नों में अपने पूर्वजों तथा अनुपस्थित मित्रों को देखकर यह निर्णय करते थे कि आत्मा के लिए शरीर आवश्यक नहीं है। आदिम मनुष्य जल में अपना प्रतिबिम्ब देख कर समझते थे कि मेरे पास एक द्वितीय आत्मा (Second self) का निवास है। इस प्रकार प्रतिबिम्ब भी उनके लिए आत्मा का प्रतीक था।

छाया के स्वरूप को देखकर आदिम मनुष्य की यह धारणा बन गई थी कि आत्मा स्वच्छन्दतापूर्वक विचरण कर सकती है। आत्मा शरीर को त्याग भी सकती है। इस प्रकार प्राणवाद का जन्म हुआ जिसमें यह माना गया है कि आत्मा और शरीर में अवियोज्य संबंध नहीं है। यद्यपि आत्मा शरीर के द्वारा अपने को प्रकाशित करती है फिर भी शरीर के साथ उसका नित्य संबंध नहीं है। अतः जीववाद से प्राणवाद का विकास होता है। इस संदर्भ में गैलवे महोदय का यह विचार - "Spirtism marks an advance on mere Animism,

and implies a development of the idea of Soul" - सत्य प्रतीत होता है।

प्राणवाद की महत्ता

प्राणवाद (Spiritism) का धर्म के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। प्राणवाद से धर्म-दर्शन की अनेक धारणाओं का जन्म हुआ है।

1) शरीर और मन के बीच भेद का ज्ञान प्राणवाद की देन है।

2) प्राणवाद की दूसरी महत्ता यह है कि इससे अमरता की भावना का विकास होता है। प्राणवाद में आत्मा का प्रकाशन शरीर के द्वारा माना गया था।

3) प्राणवाद की तीसरी महत्ता यह है कि पूर्वज-आराधना (Ancestor worship) को जन्म देने में सक्षम सिद्ध हुआ है। आदिम मनुष्य में अपने पूर्वजों को स्वप्न में देखा करते थे जिससे उनके

प्रति उनके हृदय में आदर और भय की भावना का विकास हुआ। इस प्रकार पूर्वज - आरंभ का होता है।

4) प्राणवाद की चौथी महत्ता यह है कि इससे व्यक्तित्वपूर्ण ईश्वर का विचार प्रस्फुटित हुआ है। प्राणवाद के अनुसार आत्मा का प्रकाशन भौतिक रूप में संभव है। प्राणवाद ने धर्म के विकास में योगदान प्रस्तुत किया है।

5) प्राणवाद की अंतिम विशेषता यह है कि इससे अध्यात्मवाद का विकास हुआ है। प्राणवाद में शरीर की अपेक्षा आत्मा को प्रधानता दी गई है। आत्मा को प्रधानता देने के फलस्वरूप प्राणवाद अध्यात्मवाद को जन्म देने में सक्षम सिद्ध हुआ है।

फीटिशवाद
(Fetishism)

फिटिशवाद एक धार्मिक विश्वास है जिसमें व्यक्ति किसी आत्मा को कुछ वस्तु से बांधकर उस पर अपना नियंत्रण रखना चाहता है और उससे अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है। ~~और~~ उ इस धर्म में फिटिश (fetish) को आराधना का विषय माना जाता है। 'fetish' शब्द का विकास 'feitico' से हुआ है जिसका अर्थ आकर्षण (Charm) होता है। 'fetish' शब्द का निर्माण लैटिन शब्द "factitius" से हुआ है जिसका अर्थ कृत्रिम (Artificial) होता है।

'fetish' शब्द को जादू का पर्याय भी माना गया है। मुख्य बात जो फिटिश में पायी जाती है वह यह है कि आत्मा के निवास से उसमें रहस्यमय शक्ति का विकास हो जाता है। फीटिश और उसके आत्मा के बीच कोई आंतरिक संबंध नहीं पाया जाता है। आत्मा

स्वतंत्र होने के कारण फिटिश में वर्तमान भी रह सकती है तथा अवसर पड़ने पर उसका त्याग भी कर सकती है। फिटिशवाद में उपयोगितावाद की झलक है। आदिम व्यक्ति फिटिश को तब तक पूज्य मानता है जब तक वह उपयोग में आता है। जब वह किसी काम में नहीं आता तब उसका बहिष्कार कर दिया जाता है।

आलोचना

फिटिशवाद जैसी धार्मिक विचार-धारा का प्रादुर्भाव प्राणवाद से हुआ है। फीटिशवाद में आत्मा की स्वतंत्र सत्ता मानी गई है। अधिकांश विद्वानों ने इसे निम्नकोटि का धर्म कहा है। इस धर्म में अंधविश्वास की अत्यधिक प्रधानता है जिसके फलस्वरुप इसे धर्म की सीमा में रखना असमान्य प्रतीत होता है। फिटिशवाद को धर्म कहना धर्म शब्द का गलत प्रयोग करना कहा जाता है। धर्म के इतिहास में

किटिशवाद विकास का प्रतीक नहीं है अपितु अवनति और भ्रष्टता का सूचक है।

Dr. Md. Arshad. Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.